— संगमकालीन समाज —

– संगम साहित्य से प्राचीन तमिलकम् प्रदेश के निवासियों के सामाजिक आर्थिक स्थिति का पता चलता है। सामाजिक दृष्टि से यह युग आर्य तथा आर्येतर सांस्कृतिक तत्वों के समन्वय का युग माना जा सकता है।

चातुर्वर्ण व्यवस्था का अभाव –

ब्राह्मण – सर्वाधिक सामाजिक महत्व। वैदिक यज्ञों का प्रचलन। राजदरबारी कवि रूप में भी। मांसाहारी तथा सुरा पान का प्रमाण।

वेल्लालर (कृषक) – दूसरा स्थान। राजाओं के समान सामाजिक प्रतिष्ठा। अंतर्जातीय विवाह कर सकते थे तथा शासकीय परिवार से संबंध कर सकते थे।

अनेक व्यावसायिक जातियाँ भी थीं। बंदरगाह के निकट शहरों में कुछ विदेशी जातियाँ भी। इनमें ग्रीको-रोमन तथा अरबों की अधिकता।

स्त्रियों की स्थिति – अच्छी। पितृसत्तात्मक ढाँचा परन्तु स्वतन्त्र, शिक्षा की व्यवस्था। विधवाएँ दुर्भर स्थिति में। सती प्रथा। गणिकाओं, नर्तकियों को प्रतिष्ठा।

भोजन – शाकाहार एवं मांसाहार। चावल मुख्य। दुग्ध मिश्रित सांभर – ब्राह्मण भी मांस।

शव विसर्जन – अग्निदाह तथा समाधीकरण दोनों। महापाषाणिक काल की दैनिक उपयोगी वस्तुएं भी प्राप्त।

आर्थिक दशा – कावेरी डेल्टा अधिक उपजाऊ, धान, रागी, गन्ना, हल्दी। किसानों को वेल्लार। प्रमुखों को वेलिर। समाज के निम्नवर्गीय महिलाएँ मुख्यतः खेती। इन्हें 'कडिसियर' कहा गया। आंतरिक तथा विदेशी व्यापार। पुहार प्रसिद्ध पोर्ट पांड्य राज्य में शालिपुर तथा चेर राज्य में बंदर नामक प्रसिद्ध बंदरगाह। पेरिप्लस आफ़ एरिथ्रियन सी से भी जानकारी। रोमन सम्राट के अवशेष। रोमन के पतन के बाद यहां भी ह्रास। वस्त्र उद्योग – उरैयूर

धर्म – आर्य एवं वैदिक संस्कृति का विशेष प्रभाव अगस्त्य ऋषि द्वारा दक्षिण ले जाया गया। प्राचीन देवता मुरुगन बाद में इसी देव का नाम सुब्रमण्यम तथा स्कंद कार्तिकेय से मुरुगन का प्रतीक मुर्गा। बलि प्रथा प्रचलित। महाभारत तथा पौराणिक आख्यानों का प्रचलन। कालांतर में शिव, विष्णु, कृष्ण की उपासना। बाद में बौद्ध एवं जैन धर्म का भी प्रचार (भद्रबाहु का बिहार से श्रवणबेलगोला)।

Scanned with CamScanner